हिंदुस्तानी संगीत का पाठ्यक्रम (242)

माध्यमिक स्तर

प्राचीन काल से संगीत प्रसन्नता, दु:ख, विश्रांति आदि विभिन्न मनोदशाओं की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। कला के अन्य स्वरूपों की तुलना में संगीत सबसे प्राकृतिक और सहज स्वाभाविक माध्यम है क्योंकि यह प्राण अथवा आत्मा से संबंधित है। भारतीय संस्कृति और परंपरा में संगीत भारतीय मानस से अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ है क्योंकि यह जीवन के प्रत्येक पहलू और मानव-समाज में गहराई से संबद्ध है। सारे ब्रह्मांड में व्याप्त नाद और लय के साथ मनुष्य का एक प्राकृतिक जुड़ाव है क्योंकि यही संगीत के मूल तत्वों के स्वरूप हैं। यही मुख्य कारण है कि वेदों और प्रमुख रूप से सामवेद में मंत्रों के उच्चारण के लिए संगीत को सर्वोत्तम माध्यम माना गया है।

उद्देश्य

यह संगीत का कोर्स हिंदुस्तानी संगीत के सिद्धांत और प्रयोगात्मक ज्ञान को अच्छे ढंग से प्रस्तुत करता है।

इस कोर्स का अध्ययन करने के बाद शिक्षार्थी इस योग्य होंगे कि वे–

- भारतीय संगीत के विभिन्न तकनीकी शब्दों के इतिहास के बारे में बता सकेंगे;
- निर्धारित तकनीकी शब्दों को परिभाषित कर सकेंगे;
- निर्धारित राग एवं तालों की पहचान कर सकेंगे;
- निर्धारित राग/ताल के संयोजन और उनके स्वरूपों की प्रस्तुति कर पाएंगे; तथा
- किसी भी बंदिश की स्वरलिपि लिख सकेंगे।

प्रस्तुति विधि (Delivery Method)

इस कोर्स को मुद्रित सामग्री के साथ ऑडियो कैसेट या सीडी के द्वारा प्रदान किया गया है।

समय गठन (Time Frame)

यह एक शैक्षिक कोर्स है। यह कोर्स एक वर्ष का होगा जिसे पांच वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है। इसका अर्थ है कि इस कोर्स को एक वर्ष में पूरा किया जा सकता है लेकिन मुक्त शिक्षण विधि इस कोर्स को पांच वर्ष में पूरा करने की सहूलियत अथवा लचीलापन भी प्रदान करती है।

परीक्षा की विधि

संपूर्ण अंक : 100

थ्योरी : 40 अंक तथा प्रायोगिक : 60 अंक

कोर्स संरचना

न्यूनतम अध्ययन के घंटे और थ्योरी और प्रायोगिक परीक्षा के प्रत्येक मॉड्यूल में निर्दिष्ट अंक निम्न प्रकार हैं–

मॉड्यूल सं.	मॉड्यूल का नाम	न्यूनतम अध्ययन के घंटे	अंक
सिद्धांत			
I.	जनरल संगीत-शास्त्र	48	20
II.	हिंदुस्तानी संगीत (प्राचीन एवं मध्यकालीन)	36	10
III.	हिंदुस्तानी संगीत के प्रणेता	36	10
प्रायोगिक			
IV.	हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत	35	30
V.	ताल एवं अलंकार	45	15
VI.	सुगम संगीत	40	15
	कुल	240	100

अध्ययन विधि

प्रायोगिक

3 घंटे अंक : 60

मॉड्यूल-4 हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत अंक : 30

प्रस्ताव हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत भारतीय संस्कृति का अभिन्न तत्व है। संगीत शास्त्रियों ने वर्तमान हिंदुस्तानी संगीत के विकास में प्रत्येक स्तर पर महान योगदान दिया है और इसे शानदार ऊंचाई दी है। हिंदुस्तानी संगीत ने विश्व में आदर, मान्यता और प्रतिष्ठा पाई है। इस मॉड्यूल में निम्नलिखित पाठ हैं :-

पाठ-1 द्रुत ख्याल : कोई तीन (राग-यमन, भैरव, भूपाली, अल्हैया विलावल और काफी)

पाठ-2 ध्रुपद : कोई एक (राग-यमन, भैरव, भूपाली, अल्हैया विलावल और काफी)

मॉड्यूल-5 ताल और अलंकार का प्रस्तुतिकरण अंक : 15

प्रस्ताव भारतीय संगीत के प्रणेताओं द्वारा एक महत्वपूर्ण अवधारणा की खोज **ताल** है। एक निश्चित अंतराल के साथ संगीत में बंदिशें एक निश्चित ताल और मात्रा के साथ लयबद्ध की जाती हैं। इस मॉड्यूल में निम्नलिखित पाठ हैं :-

पाठ-3 निम्नलिखित ठेकों का खाली, ताली आदि के साथ वाचन

(तीन ताल, कहरवा, दादरा, झपताल और एकताल)

पाठ-4 अलंकार : शिक्षार्थी कैसेट से कोई पांच अलंकारों का या कोई अन्य पांच अलंकारों का गायन कर सकता है।

मॉड्यूल-6 हिंदुस्तानी सुगम संगीत

अंक-15

प्रस्ताव भारत में लोगों के सामाजिक जीवन में हिंदुस्तानी सुगम संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका है। लोक गीत लाखों ग्रामीणों की मूल्यवान परंपरा है। यह श्रमिकों को असीम आनंद प्रदान करते हैं। विभिन्न भाषाओं में देशभक्ति के गीत प्रेरणा प्रदान करते हैं और समाज में एकता का निर्माण करते हैं। इस मॉड्यूल में निम्नलिखित पाठ हैं.....

पाठ-5 राष्ट्र-गान/राष्ट्रीय गीत (शिक्षार्थी राष्ट्र गान और राष्ट्रीय गीतों को गाने में समर्थ होंगे।)

पाठ-6 देशभक्ति गीत-दो (शिक्षार्थी कैसेट/सीडी में दिए गीत अथवा अन्य देशभक्ति के गीत गा सकेंगे।)

पाठ-7 लोकगीत - दो (शिक्षार्थी सी.डी. से दो लोकगीत या अन्य दो लोकगीत गा सकेंगे।)

नोट : इस कोर्स के लिए सी.डी. एनआईओएस द्वारा प्रदान की जाती हैं।

मूल्यांकन पद्धति

मूल्यांकन विधि	घंटों के समय	मॉड्यूल के अनुसार अंकों का वितरण	कुल अंक
थ्योरी (मॉड्यूल-I, II और III)	2 घंटे		40
प्रयोगात्मक (मॉड्यूल : 4, 5 और 6)	3 घंटे		60